

Saturday -09<sup>th</sup> September, 2017

## ‘देश की अखंडता एवं विकास में हिन्दी का योगदान अतुलनीय’



हैदराबाद, 8 सितंबर- (मिलाप ब्यूरो) भारतीय राष्ट्रीय महासागर सूचना सेवा केंद्र (इंकाईएस), हैदराबाद में आयोजित हिन्दी पत्रवाड़ा समारोह में संस्थान के निदेशक एवं कार्यक्रम अध्यक्ष डॉ. एस.एस.सो. शेनॉय ने कहा कि भारत में संविधान द्वारा स्वीकृत 22 भाषाएँ हैं, जिसमें हिन्दी का योगदान देश की अखंडता एवं एकता कायम रखने में अतुलनीय है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में

हिन्दी के विज्ञान के क्षेत्र में प्रयोग बढ़ाने की आवश्यकता है, जिसके दूरगामी प्रभाव होंगे।

आज यहाँ जारी प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, कार्यक्रम के मुख्य अतिथि राष्ट्रीय भूभौतिकीय अनुसंधान संस्थान (सीएसआईआर) के निदेशक एवं नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का.), हैदराबाद (3) के अध्यक्ष डॉ. वी.एम. तिवारी ने बताया कि देवनागरी लिपि



में लिखी गई हिन्दी भाषा की वैज्ञानिकता है। विश्व की सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषाओं में हिन्दी पहले स्थान पर है। अतः देश में विज्ञान चेतना जागृत करने के लिए वैज्ञानिकों को अपने प्रस्तुतिकरण एवं शोध का कार्य हिन्दी एवं प्रादेशिक भाषा में करना चाहिए।

कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि एवं देश के लब्ध प्रतिष्ठ विज्ञान संचारक

डॉ. डी.डी. ओझा ने कहा कि विश्व की ज्वलंत समस्याओं में जनसंख्या वृद्धि, गरीबी एवं प्रदूषण (3पी) शामिल है। अदृश्य प्रदूषण रूप में ध्वनि, विद्युत चुम्बकीय विकिरण, अत्यधिक रसायनों के घरेलू उपयोग ने लोगों को रोग ग्रसित कर दिया है। अतएव हिन्दी के माध्यम से विज्ञान की लोकप्रियता इस दिशा में प्रभावी कदम साबित होगा। इंकाईएस में राजभाषा के हिन्दी

कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष एवं उप-प्रधान प्रशासनिक अधिकारी के.के.बी. चारी ने बताया कि संस्थान में विगत 17 वर्षों से हिन्दी की प्रशासनिक एवं वैज्ञानिक क्षेत्रों में प्रयोग निरंतर बढ़ा है, जिसके परिणामस्वरूप ‘ग’ क्षेत्र के वैज्ञानिकों ने अपना तकनीकी प्रस्तुतिकरण हिन्दी में दिया।

अवसर पर निबंध, आशु, वैज्ञानिक प्रस्तुतिकरण एवं वच्चों के लिए हिन्दी कविता पाठ प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिसमें सभी ने बहु-चढ़कर भाग लिया। विजेताओं को निदेशक द्वारा शील्ड पुरस्कार एवं प्रशस्ति-पत्र प्रदान किए गए। कार्यक्रम का संचालन डॉ. सत्य प्रकाश ने किया। आर. वेंकट शेषु ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम में हिन्दी कार्यान्वयन समिति सदस्य सत्य प्रकाश, वेंकट शेषु, सुषित कुमार, आर. हरिचुन्मर, एस. नागेश्वर राव, सेलसा अलमेडा एवं अनिल कुन्मर का योगदान सराहनीय रहा।